भारतीय नाट्य शास्त्र में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव

श्री ललित सिंह पोखरिया
लेखक एवं निदेशक
लखनऊ

यह सम्पूर्ण चराचर ब्रह्माण्ड समय और स्थान में विद्यमान है। दूसरे शब्दों में किसी भी जड़–चेतन, दृश्य–अदृश्य या प्राकृतिक और कृत्रिम के अस्तित्व का आधार है समय और स्थान। इसी समय और स्थान में एक नाद सदा सतत् विद्यमान है। जिसे योगी और ब्रह्मज्ञानी लोग अनहद नाद के नाम से जानते हैं। इसी नाद से संगीत कला की उत्पत्ति हुई है। कहा जाता है और संगीत के पारखी जानों का निजी अनुभव भी है कि सृष्टि में जो कुछ भी है उसकी एक लय–ताल है, जो भी क्रिया हो रही है वह भी एक लय–ताल में हो रही है। इसी लय ताल की अनुभूति से संगीत के महासागर की रचना हुई है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संगीत प्रकृति और जीवन के लिए ऊर्जा और आनन्द का आधार है। संगीत के इसी महत्व के कारण हमारे भारतीय नाट्य विधान में इसको एक अति महत्वपूर्ण आधार माना गया है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं नाटक के रूप में मंच पर जो कुछ भी प्रस्तुत किया जाता है वह जीवन और सृष्टि से ही सम्बन्धित होता है। वह यथार्थ हो या वर्तमान का हो, या भविष्य का अनुमान हो उसका सम्बन्ध जीवन और सृष्टि से ही होता है। नाटक में प्रस्तुत किया जा रहा तत्व या तो भाव होता है या विचार होता है या कोई क्रिया होती है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि सृष्टि में विद्यमान हर सूक्ष्म और स्थूल अस्तित्व का आधार लय और ताल भी है।

अतः मंच पर नाटक के रूप में प्रस्तुत किये जा रहे जीवन और सृष्टि से जुड़े भाव, विचार या कर्म को दर्शकों के लिए पर्याप्त कलात्मक प्रभावयुक्त बनाने में संगीत का योगदान महत्वपूर्ण है। यह कहा जा सकता है कि संगीत नाट्य प्रस्तुति का अनिवार्य... यही आवश्यक अंग तो है ही।

...मुनि ने नाट्यशास्त्र में जिन नाट्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है उसमें अभिनय पर अत्यन्त व्यापक है। जिस प्रकार मानव शरीर के कई अंग हैं। उन सबके ..... से एक पूर्ण शरीर बनता है। उसी प्रकार भरत मुनि ने अभिनय के चार अंग बताये हैं जिनके संयोजन से समग्र अभिनय बनता है– यह चार अंग हैं– 1. आंगिक, 2. वाचिक, 3. अहार्य, 4. सात्विक

इसमें आंगिक और आहार्य दृश्यमान भौतिक अंग है, वाचिक श्रव्य भौतिक अंग है और सात्विक, अदृश्य, अभौतिक अंग है।

अन्तस् में रस सृजन (रस निष्पत्ति) का अतुलनीय सृजन धर्म निभाता है। ऐसा अभौतिक आत्मिक अनुष्ठान महती सृजनात्मक उपायों के बिना सम्पन्न नहीं हो पाता। इन सृजनात्मक उपायों में संगीत प्रधान व महान उपाय होता है।

इस निष्पत्ति का अतुलनीय सृजन धर्म तो आधुनिक समय में भी नाटक का धर्म है जो आगे भी रहेगा। चाहे वह किसी भी शैली में प्रस्तुत किया जाय। इसलिए यह कहा जा सकता है कि संगीत भारतीय नाट्य शास्त्र के आधार पर ही नहीं वैश्विक स्तर के रंगमंच हेतु भविष्य में भी एक आवश्यक सृजन आयाम बना रहेगा।

यह अदृश्य अभौतिक अंश सात्विक अर्थात् अनुभूति भाव और विचार ही श्रवण और दृश्यमान भौतिक अंग वाचिक और आंगिक के माध्यम से प्रकट होकर दर्शक के अर्न्तमन में अनुकूल रस का सृजन करता है। इस सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में संगीत कभी सहायक का काम करता है, कभी ऊर्जा का काम करता है तो कभी उत्प्रेरक का काम करता है तो कभी जीवनदायी पदार्थों के रूप में काम करता है। इस प्रकार संगीत नाटक के लिए हर दृष्टि से परम उपयोगी होता है।